पाठ-19

वसीयतनामे का रहस्य

आइए सीखें : ● समस्या में ही समाधान छिपा रहता है, यह भावना बच्चों में प्रस्थापित करना। ● कारकों की विभक्ति का ज्ञान।

*(**पाठ परिचय**- इस कहानी में गाँव के एक वयोवृद्ध किसान की न्यायप्रियता, दूरदर्शिता, ईमानदारी, निष्पक्षता और बुद्धि चातुर्य से परिचित कराया गया है। गाँव के बड़े से बड़े विवादों को वह इस प्रकार सुलझाता था कि दोनों ही पक्ष प्रसन्न होकर जाते थे। उसके चार पुत्र और एक पुत्री थी। उसने अपनी वसीयत में लिखा था कि मेरी जायदाद मेरे तीन पुत्रों में बाँट दी जाए और विवाद की स्थिति में जो भी निष्पक्ष न्याय करे, उससे मेरी पुत्री का विवाह कर दिया जाए। उसके मरने के बाद जायदाद के बँटवारे के लिए विवाद हुआ। गाँव में पंचायत हुई, किन्तु किन तीन बेटों को जायदाद का बँटवारा हो, कोई निर्णय नहीं दे सका। आखिर न्याय के लिए चारों बेटे और बेटी राजा के पास पहुँचे। राजा ने निष्पक्ष न्याय कर दिया और बेटी की शादी राजा के साथ हो गई।)*

एक गाँव में एक वृद्ध किसान रहता था। वह बहुत बुद्धिमान, दूरदर्शी व न्यायप्रिय था। दूर-दूर से लोग अपने झगड़ों का निपटारा कराने के लिए उसके पास आते थे। वह उनका फैसला इतनी निष्पक्षता व बुद्धिमानी से करता था कि दोनों पक्ष संतुष्ट होकर ही वापस जाते। एक न्यायप्रिय पंच के रूप में वह चारों ओर प्रसिद्ध हो गया था।

वृद्ध किसान के चार बेटे व एक अत्यन्त रूपवती कन्या थी। लेकिन उसने अपनी सारी जायदाद के तीन हिस्से किए और वसीयत लिखकर वह मर गया। उसके बेटों ने वसीयत पढ़ी तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उसमें दो बातें लिखी थीं। पहली सम्पूर्ण जायदाद के तीन हिस्सेकर उसे तीन भाइयों में बाँट दिया जाए लेकिन यह नहीं लिखा था कि किस भाई को हिस्सा न दिया जाए। दूसरी-जो पंच इस बात का फैसला करे उसके साथ बेटी का विवाह कर दिया जाए।

चारों भाई जायदाद के बँटवारे को लेकर झगड़ने लगे। जायदाद के तीन हिस्से थे और चार हिस्सेदार! किसी तरह निपटारा नहीं हो रहा था। यदि एक भाई अपना हिस्सा छोड़ देता तो न्याय हो जाता। लेकिन कोई भी भाई अपना हक छोड़ने के लिए तैयार नहीं था।

शिक्षण-संकेत : ■ कहानी का वाचन कराएँ ■ कहानी में छिपे नैतिक मूल्य, न्यायप्रियता, ईमानदारी, निष्पक्षता और बुद्धि चातुर्य की भावना को बच्चों में प्रस्थापित करना ■ वसीयतनामे का अर्थ तथा रहस्य स्पष्ट करना। ■ कारकों की विभक्तियों का प्रयोग विभिन्न वाक्यों के माध्यम से करना ■ वाक्य के प्रकार साधारण, मिश्रित तथा संयुक्त वाक्यों के प्रयोग।

चारों भाइयों का झगड़ा देखकर भीड़ इकट्ठी हो गयी। एक दो लोगों ने आगे बढ़कर झगड़े का कारण पूछा। चारों भाइयों ने पूरी बात बता दी। गाँव वालों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सोचने लगे कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति ने ऐसी वसीयत क्यों लिखी? अवश्य ही इसमें कोई रहस्य होगा। उन्होंने इस विवाद को जटिल समझकर उन्हें पंचायत बैठाने की सलाह दी। चारों भाई पंचायत के लिए सहर्ष तैयार हो गये।

अगले दिन गाँव के बाहर बरगद के पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। सभी पंचों ने सारे मामले पर गंभीरता से विचार किया। चारों भाइयों से तरह-तरह के प्रश्न पूछे। पंचों को यह शक था कि वृद्ध किसान के तीन बेटे असली हैं व एक बेटा उसका नहीं है। इसलिए उसने अपनी जायदाद के तीन हिस्से करने की बात वसीयत में लिखी है किन्तु चारों बेटों से पूछताछ करने पर यह स्पष्ट हो गया कि चारों बेटे वृद्ध के ही हैं। सभी पंच बहुत परेशान थे। एक महीना हो गया, लेकिन पंचायत कोई निर्णय नहीं ले पा रही थी।

एक दिन पंचायत लगी हुई थी। तभी वहाँ से एक राहगीर निकला। उसने पंचों से राम-राम की और बैठ गया। पंचों ने राहगीर को पूरा मामला समझाया और सहायता करने को कहा। राहगीर को भी आश्चर्य हुआ। उसने सभी पंचों को समझाया कि मामला इतना जटिल है कि इसका फैसला केवल महाराजा ही कर सकता है। उसने उन्हें महाराजा का पता भी बता दिया।

चारों भाई अपनी बहन तथा कुछ साथियों को लेकर महाराजा के पास चल दिए। वह

जंगल में एक शानदार महल में रहता था। महाराजा के महल तक पहुँचने के लिए दो महलों को पार करके जाना पड़ता था।

महाराजा बड़े निर्भीक, साहसी और निडर थे। उन्होंने अपनी रक्षा के लिए एक भी सैनिक नहीं रखा था। वह हमेशा प्रजा के सुख और आराम के लिए ही कार्य करते थे। उनके पास दूर-दूर से एक-से-एक जटिल मामले आते, जिन्हें वह कुछ ही पलों में इस बुद्धिमानी से हल, कर लेते कि लोग देखते रह जाते।

चारों भाई भी अपनी बहन तथा साथियों के साथ बिना रोक-टोक के पहले महल तक पहुँच गये। तभी उन्हें सत्रह-अठारह वर्ष का एक युवक दिखा।

''महाराजा कहाँ मिलेंगे?'' एक भाई ने युवक से पूछा।

'महाराजा को मरे तो तीन साल हो गए। आगे जाओ।' युवक बोला और महल के अन्दर चला गया।

चारों भाइयों व उनके साथियों को युवक की बात बड़ी विचित्र लगी। वे आगे बढ़े। कुछ ही दूरी पर दूसरा महल था। वहाँ उन्नीस-बीस वर्षीय अद्वितीय सुन्दरी कन्या घूम रही थी।

'महाराजा कहाँ मिलेंगे?' एक साथी ने कन्या से पूछा।

'महाराजा तो अंधे हो गए है, आगे जाओ।' कन्या बोली और महल के अन्दर चली गई।

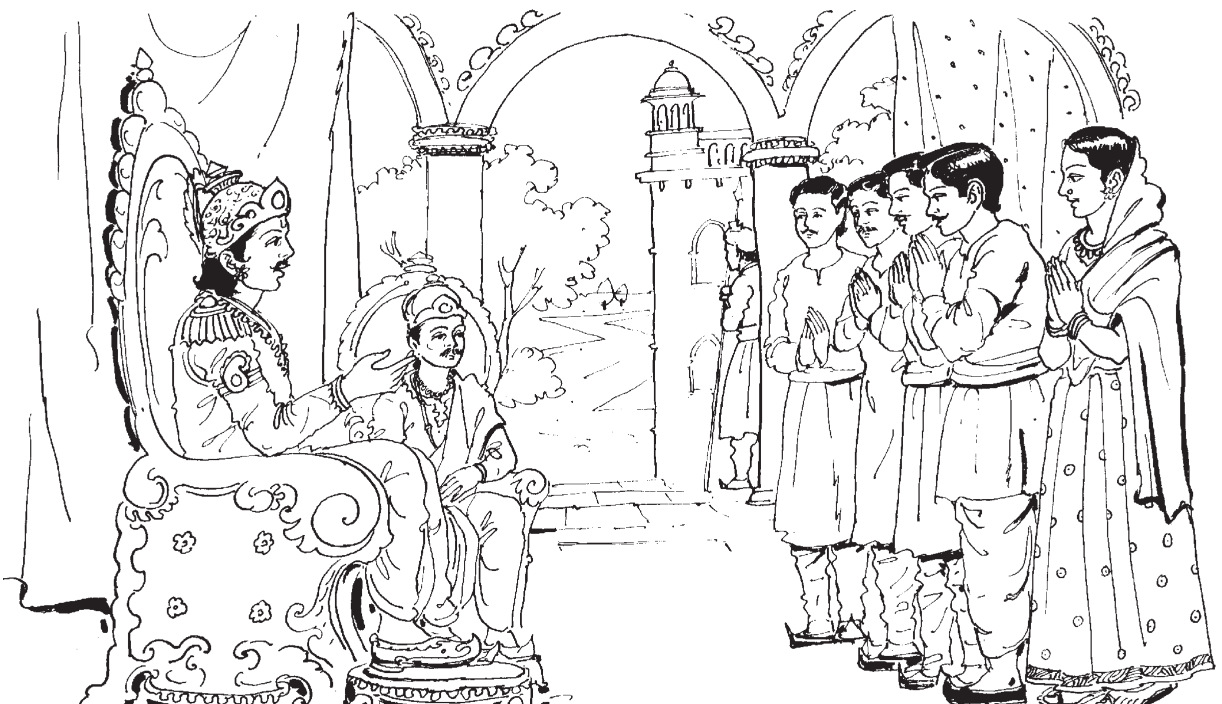

चारों भाइयों व उनके साथियों को ऐसा लग रहा था जैसे कि किसी विचित्र संसार में आ गए हों। उन्हें युवक-युवती दोनों पागल मालूम पड़े।

वे आगे बढ़े सामने महाराजा का महल था।

अभी वे लोग महल के भीतर प्रवेश करने जा रहे थे कि अन्दर से बीस-पच्चीस ग्रामीण ''महाराजा की जय'', ''महाराजा की जय'' चिल्लाते हुए बाहर निकले।

एक भाई ने उनमें से एक युवक को रोककर सारी बात पूछी। उस युवक ने बताया कि वे लोग अभी कुछ ही देर पहले एक झगड़े का निपटारा कराने महाराजा के पास आए थे और महाराजा ने अपनी बुद्धिमानी से पल भर में फैसला कर दिया। महाराजा दूध का दूध और पानी का पानी कर देता है।

युवक की बातों से चारों भाइयों व उनके साथियों को विश्वास हो गया कि महाराजा शीघ्र ही उनका निपटारा कर देगा।

वे हिम्मत करके फिर आगे बढ़े।

सामने एक बड़ा सा कमरा था, जिसमें एक ऊँचे आसन पर महाराजा बैठे हुए थे।

सभी लोगों ने महाराजा को सर झुकाकर प्रणाम किया। उन्होंने उठकर सभी को आशीर्वाद दिया और फिर अपने आसन पर बैठ गए।

''कहो, तुम लोग क्यों आये हो?'' महाराजा गम्भीर आवाज में बोले।

''महाराजा, हम लोग आपसे एक मामले का फैसला कराने आये हैं, लेकिन हमारे मामले का फैसला करने से पहले आप हमें दो बातें बता दीजिए।'' एक वृद्ध व्यक्ति बड़ी न्रमता से बोला।

''पूछो, क्या पूछना चाहते हो?'' महाराजा मुस्कराते हुए बोला।

''जब हम पहले महल के पास से गुजर रहे थे तो एक युवक मिला था। उससे हमने आपके बारे में पूछा तो उसने बताया कि आपको मरे तीन साल हो गए हैं। इस बात का क्या राज है?'' वृद्ध व्यक्ति बोला।

''दूसरी बात क्या है?'' महाराजा फिर मुस्कराते हुए बोला।

''जब हम लोग दूसरे महल के पास से गुजर रहे थे तो एक अत्यन्त रूपवती कन्या मिली। उससे हमने आपके बारे में पूछा तो उसने बताया कि आप अन्धे हो गए हैं। इस बात का राज़ भी बता दीजिए।'' उसी वृद्ध व्यक्ति ने बड़ी विनम्रता से पूछा।

''पहले जो युवक मिला था वह मेरा भाई है। राजकाज में फँसा होने के कारण मैं उससे

तीन साल से नहीं मिल सका। अतः वह कह रहा था कि मुझे मरे तीन साल हो गये और बाद में जो युवती मिली थी वह मेरी छोटी बहन है। वह जवान हो गई है और विवाह करना चाहती है। राजकाज में व्यस्त होने के कारण मैं उसके लिए वर नहीं खोज पा रहा हूँ। इसीलिए वह कह रही थी कि मैं अंधा हो गया हूँ।'' महाराजा ने गंभीरता से दोनों प्रश्नों के

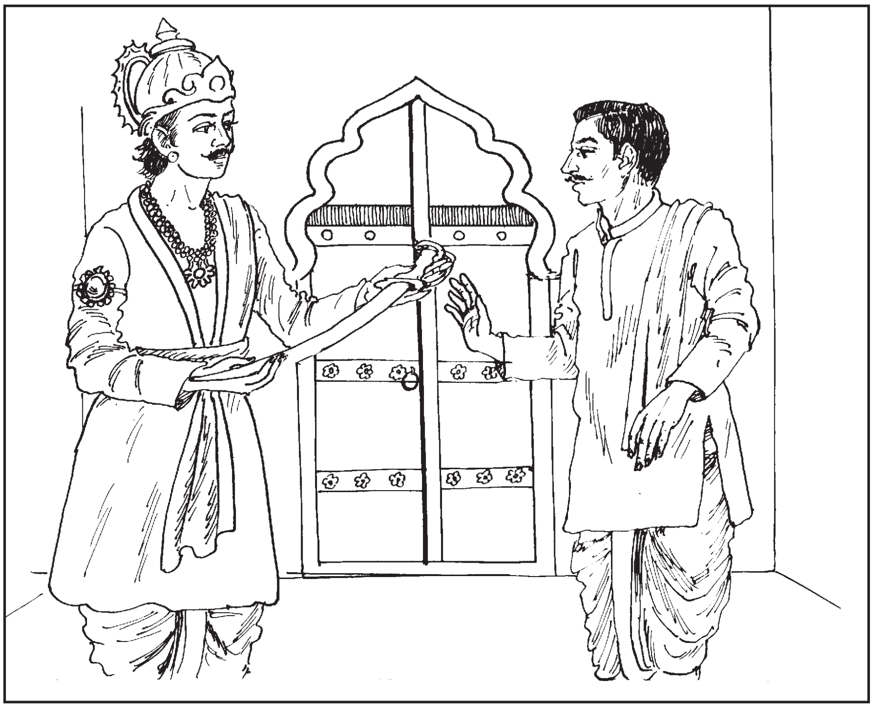

उत्तर दे दिए। तभी उनकी दृष्टि उस युवती पर पड़ी जो चारों भाइयों के साथ आयी थी। महाराजा को युवती बड़ी अच्छी लगी।

चारों भाइयों और उनके साथियों को महाराजा की बुद्धिमत्तापूर्ण बातों से पक्का विश्वास हो गया कि उनके मामले का निर्णय वह अवश्य कर देंगे।

''अब तुम लोग अपना मामला विस्तार से बताओ।'' महाराजा युवती की ओर से ध्यान हटाकर गंभीरता से बोले।

एक वृद्ध व्यक्ति ने आगे बढ़कर पूरी बात बता दी।

''अरे यह तो बड़ी आसान बात है। इसका निर्णय तो अभी हुआ जाता है।'' महाराजा हँसते हुए बोले और उठकर खड़ा हो गए।

उन्होंने अपनी कमर से बँधी तलवार निकाली और चारों भाइयों को ले जाकर एक कमरे में बन्द कर दिया। फिर उन्होंने सबसे बड़े भाई को बुलाया और एक दूसरे कमरे में ले जाकर अपनी तलवार उसके हाथ में देते हुए बोले- ''देखो भाई, तुम होशियार आदमी हो और होशियार वही होता है जो अवसर का लाभ उठाए मैंने तुम्हारे तीनों भाइयों को एक कमरे में बन्द कर दिया है। वे खाली हाथ हैं और तुम्हारे पास तलवार है। तुम अपने तीनों भाइयों को मार डालो। मैं तुम्हें सारी जायदाद का मालिक बना दूँगा।''

महाराजा ने उसे अपनी युवा बहन से विवाह का लालच भी दिया।

''मुझे अपने छोटे भाइयों की हत्या करके जायदाद नहीं लेनी। इससे तो अच्छा है कि मैं अपना हिस्सा छोड़ दूँ और तीनों भाई अपना-अपना हिस्सा लेकर आराम से रहें।'' बड़ा भाई शान्त स्वर में बोला और उसने महाराजा को उसकी तलवार वापस कर दी।

अब महाराजा दूसरे भाई को लेकर उसी एकान्त कमरे में पहुंचा। उन्होने उसे भी तलवार दी और पहले की तरह अपने भाइयों की हत्या करने को कहा। दूसरे भाई ने भी पहले के समान तलवार वापस करते हुए अपने भाइयों की हत्या से इन्कार कर दिया। इसी प्रकार तीसरा भाई भी अपना हिस्सा छोड़ने को तैयार हो गया और उसने भी अपने भाइयों की हत्या करने से मना कर दिया।

अब महाराजा चौथे भाई को लेकर एकान्त कमरे में पहुँचा। उसने उसे भी तलवार देकर पहले की तरह अपने भाइयों को कत्ल करने के लिए कहा।

चौथा भाई अपने भाइयों का कत्ल करने के लिए तैयार हो गया। उसने सोचा कि धनवान बनने का यह अच्छा अवसर है। यदि वह अपने भाइयों को कत्ल कर दे तो पूरी जायदाद उसे मिल जायगी। साथ ही महाराजा की सुन्दर बहन से उसका विवाह भी हो जाएगा।

अभी चौथा भाई रंगीन सपने देख ही रहा था कि महाराजा ने उसको जेल में डाल दिया।

महाराजा ने बाहर निकल कर तीनों भाइयों और उनके साथियों को पूरी बातें समझाईं।

सभी इस निर्णय से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने सोचा कि अवश्य ही छोटा भाई अपने पिता को भी इसी तरह कष्ट देता होगा। इसलिए उन्होंने अपनी जायदाद के तीन हिस्से किए थे।

बड़े भाई ने महाराजा के साथ अपनी बहन के विवाह की इच्छा व्यक्त की। महाराजा तैयार हो गया। वह तो पहले से ही उस पर मोहित हो चुका था।

शुभ मुहूर्त देखकर महाराजा ने विवाह किया। उसकी नवविवाहिता पत्नी केवल रूपवती ही नहीं गुणवती भी थी। उसने शीघ्र ही अपनी ननद व देवर का विवाह भी करा दिया।

- डॉ. परशुराम शुक्ल

लेखक परिचय : डॉ. परशुराम शुक्ल- हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल ने बाल साहित्य की सभी विधाओं पर अधिकारपूर्वक लेखनी चलाई है। शिशुगीत, बाल कविताएँ, बाल एकांकी तथा बाल उपयोगी ज्ञान-विज्ञान संबंधी आलेखों का सफलतापूर्वक सृजन किया है। आपका जन्म 6 जून 1947 को कानपुर जिले के मैबलू नामक ग्राम में हुआ था। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं- वृक्ष कथा, मास्टर दीनदयाल, विश्व जलचर कोश, ज्ञान विज्ञान कोश आदि।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

दूरदर्शी	-------------	जटिल	-------------
न्यायप्रिय	-------------	जायदाद	-------------
निष्पक्ष	-------------	विवाद	-------------
वसीयत	-------------		

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

क. वसीयतनामे का अर्थ समझाइए।

ख गाँव का वयोवृद्ध व्यक्ति किस विशिष्ट कार्य के लिए प्रसिद्ध था?

ग वसीयत नामे में जायदाद कितने पुत्रों को बाँटने का संकेत था?

घ बटवारे का अंतिम निर्णय किसने किया?

ङ राजा के प्रथम दो महलों में जो दो लोग मिले, वे कौन थे?

च पंचों को किस बात की शंका थी?

च वसीयतनामे में क्या लिखा था?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

क झगड़े का कारण क्या था?

ख गाँव वालों को वसीयत के बारे में जानकर आश्चर्य क्यों हुआ?

ग गाँव के वृद्ध व्यक्ति ने राजा से कौन-सी दो बातें पूछीं?

घ राजा ने तीनों भाइयों को अलग-अलग ले जाकर क्या कहा?

ङ क्या तीनों भाई राजा के प्रस्ताव से सहमत थे?

च चौथा भाई राजा के द्वारा दिए गए प्रस्ताव से क्या सोचकर सहमत हो गया?

छ राजा ने समस्या का निदान कैसे किया?

प्रश्न 4. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प को (✓) चिह्नित कीजिए :

वसीयतनामे के विषय में जानकर पंचों को शक था–

(1) वसीयतकर्ता मूर्ख था।

(2) भूल से उससे गलती हो गई।

(3) तीन बेटे असली हैं और एक बेटा उसका नहीं है।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. जायदाद विदेशी शब्द है, इसके स्थान पर मानक हिन्दी शब्द सम्पत्ति होता है। इसी प्रकार इस पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों के भी मानक हिन्दी शब्द लिखिए।

वसीयतनामे, हिस्सा, हिस्सेदार, हक, राहगीर, शानदार, फैसला, मामला, गुजर, राज, होशियार।

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए -

चारों भाइयों का झगड़ा देखकर भीड़ इकट्ठी हो गई। एक दो लोगों ने आगे बढ़कर झगड़े का कारण पूछा। चारों भाइयों ने पूरी बात बता दी। गाँव वालों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सोचने लगे कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति ने ऐसी वसीयत क्यों लिखी? अवश्य ही इसमें कोई रहस्य होगा। उन्होंने इस विवाद को जटिल समझकर उन्हें पंचायत बैठाने की सलाह दी। चारों भाई पंचायत के लिए सहर्ष तैयार हो गए।

अब समझिए -

इस अनुच्छेद में रेखांकित शब्द का, ने, के लिए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की क्रिया के साथ भूमिका निश्चित कर रहे हैं। जैसे–

भाइयों का लोगों ने पंचायत के लिए

ये शब्द कर्त्ता तथा क्रिया को जोड़ते हैं जिससे वाक्य का अर्थ स्पष्ट होता है। इनके बिना वाक्य पूर्ण नहीं होता।

नियमीकरण -

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, उसको कारक कहते हैं।

कारकों के चिह्न परसर्ग या विभक्ति कहे जाते हैं। जैसे– का, ने, के लिए।

कारकों के आठ भेद हैं इनके परसर्ग (विभक्ति) निम्नानुसार हैं-

	कारक	कार्य	विभक्तियाँ (परसर्ग)
1.	कर्ता	क्रिया को करने वाला	ने
2.	कर्म	जिस पर क्रिया का प्रभाव/फल पड़े	को
3.	करण	जिस साधन से क्रिया हो	से, द्वारा, के साथ
4.	सम्प्रदान	जिसके लिए क्रिया की गई हो	के लिए, के निमित्त
5.	अपादान	जिसमें अलग करने का भाव हो	से (पृथकता सूचक)
6.	सम्बन्ध	क्रिया से सम्बन्ध बताने वाला	का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
7.	अधिकरण	क्रिया करने का स्थान/आधार	में, पर
8.	सम्बोधन	जिससे संज्ञा को पुकारा जाए	अरे, ओ, हे आदि।

प्रश्न 3. इस पाठ में आने वाले विभिन्न कारकों के उदाहरण छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यों में से साधारण वाक्य, मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य अलग करके लिखिए।

(क) एक गाँव में एक किसान रहता था।

(ख) जायदाद के तीन हिस्से थे और चार हिस्सेदार थे।

(ग) यदि एक भाई अपना हिस्सा छोड़ देता तो न्याय हो जाता।

(घ) वे सोचने लगे कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति ने ऐसी वसीयत क्यों लिखी?

(ङ) एक दिन पंचायत लगी थी।

(च) महाराजा हँसते हुए बोला और उठकर खड़ा हो गया।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्द, शब्द युग्म हैं या पुनरुक्त? उनके सामने लिखिए।

दूर-दूर.................. तरह-तरह .... राम-राम ....

सत्रह-अठारह .... युवक-युवती .... उन्नीस-बीस ....

अपना-अपना .... एक-दो ....

प्रश्न 6. पाठ में दिए गए प्रसंग के अनुसार सही जोड़े (विशेषण विशेष्य) बनाइए।

वर्ग (क)	**वर्ग (ख)**	**सही जोड़े**
दूसरा	मामला	दूसरा महल
अद्वितीय	स्वर	....
शान्त	महल	....
चौथे	कन्या	....
रंगीन	सुन्दरी	....
रूपवती	सपने	....

प्रश्न 7. उदाहरण की तरह शब्दों के रूप परिवर्तित कीजिए।

दुकान - दुकानें

कपड़ा - कपड़े

बहन, भाई, युवक, युवती,

महल, सपना, मामला, राहगीर

पढ़िए और समझिए-

अनुतान- जब हम बोलते हैं तब हमारा लहजा बदलता रहता है। शब्दों को हमेशा एक ही लहजे में न बोलकर उतार-चढ़ाव के साथ बोलते है। बोलने में आए इन उतार चढ़ावों के अन्तर को सुर-परिर्वतन कहते हैं।

हिन्दी में सुर-परिर्वतन या सुर का उतार-चढ़ाव तो मिलता है पर इसके कारण शब्दों का अर्थ नहीं बदलता। हिन्दी में सुर-परिर्वतन वाक्य के स्तर पर कार्य करता है, अर्थात वाक्य का अर्थ बदल देता है जब सुर-परिर्वतन से वाक्य का अर्थ बदल जाता है तब वह अनुतान कहलाता है।

प्रश्न 8. शिक्षक की सहायता से इस पाठ के कुछ महत्वपूर्ण वाक्यों को अनुतान के साथ (भिन्न-भिन्न ढंग से) पढ़िए और उनके बोलने से होने वाले अर्थ परिवर्तन को समझिए।

उदाहरण -

वाक्य स्तर पर अनुतान का प्रयोग

मोहन जाएगा।	(सामान्य कथन)
मोहन जाएगा?	(प्रश्नवाचक)
मोहन जाएगा!	(विस्मय सूचक)

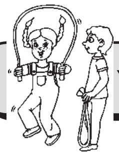

योग्यता विस्तार

- इस पाठ को पढ़कर अपने मन में पैदा होने वाले विचारों को संक्षेप में लिखिए अथवा उनके विषय में कक्षा में चर्चा कीजिए।
- आपने यदि ऐसी ही कोई अन्य कहानी पढ़ी या सुनी हो तो बाल सभा में हाव-भाव के साथ सुनाइए।
- इस कहानी से हमें क्या संदेश (शिक्षा) मिलता है? कक्षा में सबको समझाइए।

यह भी जानिए :

मध्यप्रदेश में बहुत-सी जनजातियाँ निवास करती हैं। प्रत्येक जनजाति की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है। यह विशिष्टता न केवल खानपान, रहन-सहन, लोक परम्पराओं में परिलक्षित होती है, अपितु प्रशासन एवं न्याय व्यवस्था में भी इसे देखा जा सकता है। मोघिया न्याय व्यवस्था में पंचायत के माध्यम से निर्णय किया जाता है, जिसमें पंच रोचक कहानी के माध्यम से परिणाम तक पहुँचते हैं। प्रस्तुत कहानी इसी विशिष्ट न्याय व्यवस्था पर आधारित है।